पर चिंतन, पर दर्शन में न समय गंवाना
संगम का हर पल है खुशियों का खज़ाना
कल्प में एक बार है आता उसको व्यर्थ नही लुटाना
आत्मा की उन्नति होती ,मिलती उसको जीवन्मुक्ति
इन आँखों से जो दिख रहा, सब मिट्टी में मिल जाना
विनाशी धन की कमाई न साथ चलेगी
ज्ञान की सच्ची अविनाशी कमाई संग रहेगी
एक- एक कर्म का हिसाब धर्मराज लेगा
विकार्मों की सजाए कूट -कूट के देगा
मोचाडा खाकर मिलेगी जो मानी
उंच पद छोड़ बन जाओगे फिर दास -दासी
भाग्य कमाने का अवसर जो छुटा
समझो पूरे कल्प जो बनना था भाग्य वो फूटा
बुद्धि एक बाप से अलग कही और जो भटकी
माया ने मौका ले लगायी चमाट कसकी
ठोक ठोक के वो सबकी जांच करती
कान -नाक खींच चोटी पकड़ बाहर पटकती
रावण राज्य में घसीट कर शुद्र बनाती
सब परो को काट अब एक परम आत्मा से जुड़ना
स्वचिन्तन कर आत्मा की उन्नति करना

अंडर ग्राउंड हो सेलवेज आर्मी बनना
अटेंशन प्लीज् का आर्डर ..सिर्फ बाप को याद करना
रूहानी सेना हो रूहों को सेलवेज करना
स्वयं का भी और सर्व का कलयाण करना

ॐ शांति